

Padma Shri



SMT. SANGKHUMI BUALCHHUAK

Smt. Sangkhumi Bualchhuak is the Chairman of New Life Home Society which established Jerico Inn in 1990, the first Women De-addiction, Rehabilitation and Counselling Centre in Mizoram. She has been the founder Project Director of Jerico Inn and with her initiatives, vocational training courses such as tailoring, embroidery and beauty culture have been started there which helped the patients in self-employment and entrepreneurship. These trainings have made several women to lead a life of dignity and establish successful families.

2. Born on 1st March, 1949 at Champhai, Smt. Sangkhumi completed B.A. (History Hons.) and M.A. (History) from Guwahati University, Assam. She was selected to represent Assam in the "International Youth Seminar" in 1970 organised on the closing of 'Gandhi Centenary Celebration' in India.

3. With Smt. Sangkhumi's enthusiasm as Vice President, an Orphanage Home called 'Hmangaihte Run' was established under Mizo Hmeichhe Insuihkhawm Pawl (MHIP), an apex body representing several local women's groups. As President in 2005, she obtained permission from Govt of Mizoram, to act as Adoption Agency and thus 10 children below 6 years and 13 other children were given for adoption during 2005-2006. She has also donated a plot of land for establishment of Van Palai De-addiction and Rehab Centre which she inaugurated as Chairman of the Managing Board in 2016. As requested by the local authorities of Chawilung village having no High School, she established a High School at Chawilung village in 2019.

4. Smt. Sangkhumi is acknowledged as 'Champion of Women Empowerment' in the whole Mizo Community. Due to the untiring efforts of Smt. B. Sangkhumi, Mizoram became the first State in India implementing Domestic Violence Act, 2005. She prepared 'Domestic Violence Act, 2005 in a short form (Mizo version) for 'Wall Display' and distributed in every house. She also prepared a Booklet on 'Crimes against women and Human Trafficking' with all important necessary information. Her untiring efforts ultimately resulted in the legislation of "The Mizo Marriage, Divorce and Inheritance of Properties Act 2014 and 'The Lushai Hills Dist (Village Councils) (Amendment) Act 2014. These Acts were celebrated by MHIP throughout Mizoram. As President, MHIP Hqrs, she signed MOU with Health Dept for AIDS Awareness and opening of Drop-in Centres, Cancer Awareness and Pap Smear Clinic, TB and Malaria Awareness; with Sports Dept for Mizoram Women Hockey Championship Tournament and with KVI for Pickle and Jam making training.

5. Smt. Sangkhumi is the recipient of many Awards and various Honours. Smt. B. Sangkhumi has been given a new name, 'ZOHMANGAIHI' (Lover of the Mizos). Acknowledging various achievements of MHIP under her leadership, Mizoram Govt. declared MHIP DAY of 6th July as a 'State Holiday' from 2005. She is a true Social Activist and a distinguished quality of a woman who made remarkable achievements in various fields from various Social Organisations. She has been hailed as 'Champion of Women Empowerment and Social Reformer of the Mizo Society' by MHIP and other Social Organisations in different fields. .



श्रीमती साङ्खूमी बुअलछुक

श्रीमती साङ्खूमी बुअलछुक, न्यू लाइफ होम सोसाइटी की चेयरमैन हैं। उन्होंने वर्ष 1990 में मिजोरम का पहला महिला व्यसन मुक्ति, पुनर्वास और काउंसलिंग केंद्र, 'जेरिको इन' खोला। वह 'जेरिको इन' की संस्थापक परियोजना निदेशक रही हैं और उनके प्रयासों से, वहां सिलाई, कढ़ाई और सौंदर्य प्रसाधन जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण कोर्स शुरू किए गए हैं जिनसे स्व-रोजगार और उद्यमिता को रोगियों की मदद मिली है। इन प्रशिक्षणों से बहुत सी महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन जीने और सफल परिवार बनाने में समर्थ बनी है।

2. 1 मार्च, 1949 को चंफई में जन्मी श्रीमती साङ्खूमी ने गुवाहाटी यूनिवर्सिटी, असम से इतिहास विषय में बी.ए. और एम. ए. की पढ़ाई पूरी की। उन्हें 1970 में भारत में गांधी शताब्दी समारोह के समापन पर आयोजित 'इंटरनेशनल यूथ सेमिनार' में असम के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था।

3. कई स्थानीय महिला समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक सर्वोच्च निकाय, मिजो हीमछे इनसुइखाम पॉल (एमएचआईपी) के उपाध्यक्ष के रूप में, श्रीमती साङ्खूमी के प्रयासों से 'हमनगाइते रन' नामक एक अनाथालय स्थापित किया गया। वर्ष 2005 में अध्यक्ष के रूप में उन्होंने मिजोरम सरकार से एक अडॉप्शन एजेंसी के रूप में कार्य करने की अनुमति ली और इस प्रकार वर्ष 2005-06 के दौरान 6 वर्ष से कम उम्र के 10 बच्चों और अन्य 13 बच्चों को गोद दिया गया। उन्होंने वन पलई व्यसन मुक्ति और पुनर्वास केंद्र की स्थापना के लिए जमीन का एक प्लॉट भी दान दिया है। उन्होंने वर्ष 2016 में मैनेजिंग बोर्ड के चेयरमैन के रूप में उसका उद्घाटन किया। जब चावीलंग गांव के स्थानीय अधिकारियों ने उनसे अनुरोध किया कि वहां कोई हाई स्कूल नहीं है, तो उन्होंने वर्ष 2019 में चावीलंग गांव में एक हाई स्कूल स्थापित किया।

4. श्रीमती साङ्खूमी को पूरे मिजो समाज में 'महिला सशक्तीकरण का समर्थक' माना जाता है। उनके अथक प्रयासों से, मिजोरम, घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 को लागू करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया। उन्होंने 'घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005' का संक्षिप्त रूप (मिजो संस्करण) 'वाल डिस्प्ले' के लिए तैयार किया और उसे घर-घर बंटवाया। उन्होंने सारी महत्वपूर्ण जरूरी सूचनाओं के साथ 'महिलाओं के प्रति अपराध और मानव तस्करी' पर एक पुस्तिका भी तैयार की। उनके अथक प्रयासों से आखिरकार 'मिजो विवाह, विवाह-विच्छेद और संपत्ति का उत्तराधिकार अधिनियम 2014' और 'लुशई हिल्स जिला (ग्राम परिषद) (संशोधन) अधिनियम 2014' का कानून बना। एमएचआईपी द्वारा पूरे मिजोरम में इन अधिनियमों पर खुशी मनाई। एमएचआईपी मुख्यालय के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने एड्स जागरूकता और ड्रॉप इन केंद्र खोलने, कैंसर जागरूकता और पैप स्मियर क्लिनिक, टीबी तथा मलेरिया जागरूकता के लिए स्वास्थ्य विभाग के साथ; मिजोरम महिला हॉकी चैंपियनशिप टूर्नामेंट के लिए स्पोर्ट्स विभाग के साथ तथा अचार और जैम बनाने की ट्रेनिंग के लिए केवीआई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

5. श्रीमती साङ्खूमी को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें एक नया नाम 'जोहमांगैही' (मिजो समुदाय से प्रेम करने वाली) दिया गया है। उनके नेतृत्व में एमएचआईपी की विभिन्न उपलब्धियों के सम्मानस्वरूप मिजोरम सरकार ने 2005 से 6 जुलाई के एमएचआईपी दिवस को 'राज्य अवकाश' घोषित किया। वह एक सच्ची सामाजिक कार्यकर्ता और विशिष्ट गुणों वाली महिला हैं जिन्होंने अनेक सामाजिक संगठनों के जरिए विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्हें एमएचआईपी और विभिन्न क्षेत्रों के अन्य सामाजिक संगठनों द्वारा 'महिला सशक्तीकरण की चैंपियन और मिजो समाज की सुधारक' का दर्जा दिया गया है।